ग्रामीण जनों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. विनीत कुमार पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग, बी.आर.डी.बी.डी.पी.जी. कालेज
आश्रम बरहज देवरिया (उ.प्र.)

प्रस्तावना-भारत को गॉवो का देश कहा जाता है तथा गॉव का प्रत्यक्ष सम्बधं प्रकृति से होता है। प्रकृति द्वारा मानव जीवन के लिए वायु, जल, वातावरण, पर्यावरण नदियॉ, पहाड़ आदि स्वतः प्राप्त हुए। लेकिन जैसे-जैसे शहरीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण की प्रक्रियाऐ प्रारम्भ हुई पर्यावरण प्रदूषित होने लगा। निश्चित ही हम विकास की गति को आगे बढ़ाते चले जा रहे है लेकिन बढ़ता प्रदूषण, गंदगी हमारे शरीर एवं मन दोनो को प्रभावित करते जा रहे है। कहा जाता है कि श्स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता हैश् और यह हमें स्वच्छता से ही प्राप्त होगा ओ.डी. एफ. (खुले में शौच) से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते जा रहे है। जिस पर सरकार द्वारा ओ.डी. एफ. (खुले में शौच पर प्रतिबन्ध) द्वारा नियत्रित करना चाहती है

सार संक्षेप-स्वच्छता, ओ.डी.एफ., पर्यावरण प्रदूषण, औद्योगीकरण।

भारतीय संस्कृति में स्वच्छता का एक विशेष स्थान दिया गया है। देवी-देवताओं की पूजा करने के पहले वहॉ साफ-सफाई की जाती है। उसमें व्यक्तिगत स्वच्छता भी पाई जाती है। स्वच्छता के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने भी कहा था कि श्मुझे स्वच्छता एवं स्वतंत्रता में से चुनना होगा तो ही स्वतंत्रता के पहले स्वच्छता का चयन करूगा पर्यावरणीय स्वच्छता एवं वैयाक्तिगत स्वच्छता उनकी प्राथमिकता थी। डॉ.बी.आर. अम्बेडकर, बाबा राघव दास संत गाडगे जैसे महापुरूष ने भी स्वच्छता के लिए आंदोलन चलाया था।

स्वतंत्रता बाद **1986** में केन्द्रिय ग्रामीण स्वच्छता योजना चलायी गयी बाद मे **1999** में देश में सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसके अन्तर्गत**1990** से **2008** के बीच के तथ्यों द्वारा यह संकेत मिला कि स्वच्छता से सम्बन्धित मुद्दो पर असफलता ही प्राप्त हुआ नागरिको के खराब स्वास्थ्य को देश की समृद्धि से देखा जा सकता है। इसी कारण देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने **2** अक्टूबर **2014** को स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत की। जिसका लक्ष्य महात्मा गॉधी के **150** की जयंती **2** अक्टूबर **2019** तक भारत को खुले मे शौच से मुक्त कराना रहा। **5** सितम्बर **2016** तक ऐसे **17** जिलों तथा **80000** गॉवों में खुले मे शौच की बुराई से मुक्त हो चुके थे। भारत मे ओ.डी.एफ. अर्थात खुले मे शौच की समस्या स्वच्छता के लिए एक चुनौती है शौचालयों का अपर्याप्त उपयोग सीधे तौर पर भारत में बिमारियों तथा मृत्यु की उच्च दर को बढ़ावा देता है। प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण जनो मे स्वच्छता के प्रति जागरूकता पर आधारित है। जिससे यह

जानने का प्रयास किया गया है। कि ग्रामीण लोग स्वच्छता को किस नजरिये से देखते है इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है।

उद्देश्य-

1.ग्रामीण जनो से व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे मे जानकारी प्राप्त करना।
2.ग्रामीण जनों की शैक्षणिक स्थिति का पता लगाना।
3.ग्रामीण लोगो में कचरा प्रबंधन के प्रति झुकाव का पता लगाना।
4.स्वच्छ भारत अभियान के प्रति ग्रामीण जनो में जागरूकता की जानकारी प्राप्त करना।
5.खुले मे शौच के बारे मे ग्रामीण जनो से जानकारी प्राप्त करना।

शोध उपकल्पना- सामाजिक अनुसंधान में बिना उपकल्पना के शोध कार्य को आगे नही बढ़ाया जा सकता अतः इस अध्ययन की निम्नलिखित उपकल्पनाए मानी गयी है।

1.शिक्षा का बढ़ता स्तर स्वच्छता के प्रति जागरूकता को बढ़ाता है।
2.स्वच्छता का ऊँचा स्तर व्यक्तिगत रोगो को कम करता है।

निदर्शन एवं अध्ययन पद्धतिः-निदर्शन क्षेत्र का चुनाव दैव निदर्शन की लाटरी पद्धति के द्वारा क्रिया गया। देवरिया जनपद के बरहज विकास खण्ड के पचौहॉ गॉव को चयनित किया गया। **2011** की जनगणना के अनुसार यहॉ की कुल जन सं. **1688** रही है तथा मकानो की संख्या सं0 **269** है। जिसमें दलित बस्ती का चयन उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए किया गया। जहॉ घरो की सं0 **92** एवं जनसंख्या **350** है जो वार्ड नं.- **1** के अन्तर्गत प्रत्येक घर से **1** उत्तरदाता का चयन करते हुए **80** उत्तरदाताओं से तथ्यों का संकलन किया गया।

इस अध्ययन में वर्णनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया है तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो ही श्रोतों से क्रिया गया है। और तथ्यों का संकलन साक्षात्कार-अनुसूची के माध्यम से किया गया। सभी उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र मे निवास करते है।

परिणाम एवं व्याख्याः-

सारणी संख्या-**01**

उत्तर दाताओं में शैक्षणिक स्तर

भौक्षणिक स्तर	संख्या	प्रति"ात
परास्नातक	02	2.50
स्नातक	10	12.50
इण्टरमीडिएट	14	17.50
हाईस्कूल	25	31.25
जू0 हाईस्कूल	12	15.00
प्राइमरी	12	15.00
अ"ाक्षित	05	06.25
योग	80	100.00

परोक्त सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि निदर्शन क्षेत्र के उत्तरदाताओं में सर्वाधिक **31.25** प्रतिशत हाईस्कूल तक **17.50** प्रतिशत इण्टरमीडिएट प्राइमरी एवं जू. हाई स्कूल तक **15.00** प्रतिशत **12.50** प्रतिशत स्नातक **2.50** प्रतिशत परास्नातक स्तर के है। वही **06.25** प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित भी पाये गये । अतः शिक्षा के स्तर मे सुधार हो रहा हैऔर शिक्षा के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है।

सारणी सं**0-02**

घर में शौचालय की स्थिति

भौचालय	संख्या	प्रति"ात
हॉ	76	95
नही	04	05
योग	80	100.00

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओ में **95.00** प्रतिशत के पास शौचालय पाया गया। मात्र **5** प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे थे जिनके पास शौचालय नही पाया गया। जिन्होने आर्थिक स्थिति ठीक न होना बतलाया।

सारणी सं.**-03**

शौचालय के प्रयोग सम्बंधी विवरण

भौचालय का प्रयोग	संख्या	प्रति"ात
हॉ	64	80
नही	16	20
योग	80	100.00

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि **80** प्रतिशत उत्तरदाता शौचालय का प्रयोग करते है जो स्वच्छता एवं विमारियों की जानकारी रखते है। वही **20** प्रतिशत उत्तरदाता शौचालय का प्रयोग नही करते क्योकि सुबह उन्हे टहलने एवं लोगो के बात-चीत करना अच्छा लगता है।

सारणी सं.**-04**

ओ0डी0एफ	संख्या	प्रति"ात
हॉ	26	32.50
नही	54	67.50
योग	80	100.00

ओ.डी.एफ. के प्रति जानकारी का विवरण

ओ**0**डी**0** एफ (व्चमद क्ममिबंजपवद थ्तमम) खुले मे शौच मुक्त जो भारत सरकार द्वारा स्वच्छता एवं सफाई को बनाये रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है के प्रति जानकारी में **67.50** प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नही में उत्तर दिया जबकि **32.50** प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हॉ में उत्तर दिया। जिनको यह पता है कि इससे उल्टी दस्त, हैजा, डायरिया सहित **80** प्रकार की बिमारी या रोग होता है अभी इस अभियान को जन-जन तक पहुचाने की जरूरत है।

सारणी सं.**-05**

कचरा प्रबंधन सम्बधित जानकारी का विवरण

कचरा प्रबंधन का प्रयोग	संख्या	प्रति"ात
हॉ	48	60.50
नही	32	40.50
योग	80	100.00

कचरा प्रबंधन स्वच्छता के लिए आवश्यक कार्य होता है जिसमें कचरों को एक जगह एकत्र करके उसका निपटारा किया जाता है जिससे जन स्वास्थ्य में सुधार आता है। इस प्रक्रिया में अवशेषो को कम करना, पुनः उपयोग करना, रिसायकल करना, पुर्न प्राप्त करना होता है। निदर्शन क्षेत्र में तथ्य संकलन करने पर यह पता चला कि **60** प्रतिशत उत्तरदाता कचरा प्रबंधन से परिचित है जबकि **40** प्रतिशत उत्तरदाता इसे नही जानते है अतः लोगों को कार्यक्रमों के मध्यम से जागरूक करना आवश्यक है। लोग कचरों को सड़क तथा खेतों मे फेक देते है।

सारणी सं.**-06**

नाबदान सम्बन्धी जानकारी का विवरण

नाबदान सम्बन्धी	संख्या	प्रति"ात
खेतो में	12	15.00
सार्वजनिक नाली में	53	66.25
गढ्ढे मे	15	18.75
योग	80	100.00

नाबदान का पानी बहना

नाबदान घर की गंदगी को बाहर ले जाने का एक रास्ता है। तथ्य संकलन के दौरान सर्वाधिक **66.25** प्रतिशत उत्तरदाताअें ने सार्वजनिक नाली के प्रयोग के बात की लेकिन **15** प्रतिशत ने खेत मे तथा **18.75** उत्तरदाताअें ने गढ्ढे में एकत्र करने की बात कही। इससे स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक नाली होते हुए इसका पूरा प्रयोग नही हो रहा है। इसका मुख्य कारण नाबदान की सफाई की न होना है। नाबदान मे पानी एकत्र होने से मलेरिया, डेगू एवं बदबू का सामना करना पड़ता है। सार्वजनिक नाली की सफाई भी समय-समय पर होना चाहिए।

प्लास्टिक सम्बन्धी जानकारी एकल प्लास्टिक	संख्या	प्रति"ात
हॉ	08	10.00
नही	72	90.00
योग	80	100.00

सारणी सं.**-07**

प्लास्टिक संम्बन्धी प्रयोग की तालिका (सिंगल यूज प्लास्टिक)

प्लास्टिक की बोतले, कण्टेनर, किराना बैग आदि ये पर्यावरण को दूषित बनाती है। भारत में सलाना **35** लाख मिट्रीक टन प्लास्टिक का कचरा पैदा होता है।इस संदर्भ में उत्तरदाताओं से जानकारी ली गयी तो **90** प्रतिशत उत्तरदाताओं को सिंगल यूज प्लास्टिक के बारे मे जानकारी नही थी मात्र **10** प्रतिशत लोगो ने हॉ मे जबाब दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जानकारी के अभाव मे लोग प्लास्टिक का दुरूपयोग कर रहे है। जो समाज के लिए हानिकारक है।

सारणी सं.**-08**

सरकार द्वारा चलायी जा रही स्वच्छता सम्बन्धी योजना की जानकारी

जानकारी	संख्या	प्रति"ात
हॉ	68	85.00
नही	12	15.00
योग	80	100.00

सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के संदर्भ में ग्रामीण जनों से तथ्य संकलन किया गया है तो सर्वाधिक **85** प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हॉ में जबाब दिया जिनको समाचार पत्रों, टेलीविजन, मोबाईल फोन तथा लोगो से बात-चीत से पता चला। लेकिन **15** प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नही में जबाव दिया।

निष्कर्ष- ग्रामीण जनो मे स्वच्छता के प्रति जागरूकता सम्बन्धी अध्ययन से सम्बन्धित उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर **निष्कर्षत:**

यह कहा जा सकता है कि उत्तरदाताओ में सर्वाधिक हाईस्कूल तक अध्ययन करके अपने व्यवसाय में लग गये। **95** प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास शौचालय है लेकिन जाते नही बाहर जाते है। खुले मे शौच मुक्त जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है **67.50** प्रतिशत उत्तरदाताओं को इसकी या इससे होने वाले लाभ एवं हानि के बारे मे जानकारी ही नही है। वही कचरा प्रबंधन जो पर्यावरण को नुकसान होने से बचाता है **60** प्रतिशत उत्तरदाताओं को जानकारी है, लेकिन करते नही है लगभग सभी उत्तरदाताओं के घर में नाबदान है लेकिन व्यवस्थाऐ अलग-अलग है। **66** प्रतिशत उत्तरदाता सार्वजनिक नाली का प्रयोग करते है। सिंगल यूज प्लास्टिक की जानकारी लगभग **90** प्रतिशत उत्रदाताओं को नही है। इसी प्रकार सरकार द्वारा चलाई जा रही स्वच्छता सम्बधी जानकारी भी **85** प्रतिशत उत्तरदाताओं को ही है।

सुझाव-

भारत सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्वच्छता सम्बन्धी अभियान को एक आन्दोलन का रूप देना होगा। आज गॉव में शिक्षा का स्तर तो बढ़ता जा रहा है लोगो को जानकारी भी है लेकिन क्रियान्वयन का अभाव है। ग्रामीण जनो में पर्यावरण प्रदषण के प्रति जागरूकता लाना होगा। स्वच्छता को अपनी आदतो मे शमार करना होगा। दैनिक सफाई, साप्ताहिक सफाई,

मासिक सफाई, वार्षिक सफाई एवं आकस्मिक सफाई को अपनाना होगा। स्वच्छता की शुरूआत स्वयं से करना होगा जब हमारा समाज बिमारी एवं गंदगी से दूर रहेगा तभी प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

****

संन्दर्भ सूची:-

1.नागला, बी**0**के**0** **(2023)** श्स्वच्छता का समाजशास्त्रश् रावत पब्लिकेशन, जयपुर पृ**0 1-15**
2.कुमार गौरव **(2015)** श्सामाजिक मानसिकता में बदलाव से ही संभव है स्वच्छ भारतश् योजना **2015** पृ**0-61**
3.पिल्लई के**0** विजयन एवं पारेख रूपल **2015**श्भारत में स्वच्छता एवं सामाजिक परिवर्तनश् योजना पृ**0-9-15**
4.सिंह आशुतोष कुमार **(2015)** श्स्वच्छ भारत से ही साकार होगा स्वस्थ भारतश् योजना अंक **1** पृ**0-37**
5.गिरी, राजीव रंजन **(2016)** श्ग्रामीण स्वच्छता एवं गॉधी जीश् कुरूक्षेत्र, अक्टूबर अंक-**12** पृ**0 41-44**
6.तोमर, नरेन्द्र सिंह **(2016)** श्स्वच्छ भारत मिशनः व्यवहार परिवर्तन से समाजिक परिवर्तन तकश् कुरूक्षेत्र अंक-**12** पृ**0-67**
7. दास डी**0** के**0** लाल **(2023)** श्समाजिक शोध सिद्धांत एवं व्यवहारश् रावत पब्लिकेशन, जयपुर पृ**0 23-40**
8.www.deoria.nic.in

युग प्रवर्तक कवि हरिवंशराय बच्चन

डॉ.पुष्पा गोविंदराव गायकवाड
वै. धुंडा महाराज देगलूरकर
महाविद्यालय, देगलूर

तू न थकेगा कभी
तू न रूकेगा कभी
कर शपथ - कर शपथ
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ

हालावाद के प्रवर्तक हरिवंशराय बच्चन का जन्म उ.प्र.के इलाहाबाद शहर के मोहल्ला चाक में कायस्त परिवार में 27 नवम्बर 1907 मे हुआ। और मृत्यू 18 जनवरी 2003 को मुंबई में हुई। हिन्दी साहित्य को हालावादी विचार धारा से अमर बनाने का श्रेय कविवर बच्चन को ही, दिया जाता है। अपनी सरल और सरस कविता के द्वारा जन-मन को मुग्ध कर एक युग प्रवर्तक कवि होने का परिचय दिया है।मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकात संगीत, मिलन, यामिनी, प्रणय पत्रिका, बंगाल का अकाल, आरती और अंगारे, बुध्द और नाचघर, दो चट्टाने आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ है।इनकी कविता में तीन मोड दिखाई देते है। मधुशाला और मधुकलश में हालावादी दृष्टि दिखाई देती है। हाला प्याला और मदिरालय के माध्यम से कवि जीवन की क्षण भुगंरता की सुंदर व्याख्या की है। पहली पत्नी श्याम की मृत्यू के बाद अवसाद के क्षणो में उन्होंने निशा - निमंत्रण, एकांत संगीत और आकुल अंतर की रचना की जिसे उनके काव्य जीवन का दूसरा मोड कहा जाता है। सतरंगिनी मिलन - यामिनी और प्रणय पत्रिका, तीसरे मोड को सूचित करती है।

कवि बच्चन जी ने हाला, प्याला सुराही, मदिरालय आदि द्वारा उन्होंने मनुष्य गतिशीलता, संघर्ष शीलता क्षण भंगुरता सहज प्रतिकात्मकता, उल्लास जवानी की मस्ती तथा पराजय की भावना से मुक्ति का संदेश दिया है। साथ ही उनकी कविताएँ जीवन के प्रति विश्वास कर्तव्यता समाज की अभाव ग्रस्तता वैयक्तिक आदि को भी प्रस्तुत करती है। बच्चन जी की कविताएँ व्यक्ति को जातीयता वर्णवाद एंव साम्प्रदायिक आदि से ऊपर उठकर जीने की नयी प्रेरणा देती है। मधुशाला यह उनकी ऐसी कविता है। जहा परसब लोग आपसी बैर भुलाकर एक साथ घुल मिलकर रहने का संदेश देती है। इनकी मधुशाला में काई जाति भेद या वर्णभेद नही होता, वह सबका स्वागत करती है। और जो लोग मंदिर मस्जिद के नाम पर लडते है। मधुशाला उनका मेल कराती है उनमें समता समानता का मूल मंत्र देती है। जैसे

धर्म ग्रंथ सब जला चुकी है, जिसके अन्दर की ज्वाला
मन्दिर मस्जिद गिरजे
सब को तोड चुका जो मतवाला
पण्डित मोमिन पादरियों के फन्दो को
जो काट चुका
कर सकती है आज उसी का स्वागत
मेरी मधुशाला

मधुशाला पंडित मोमिन पादरियो के विवादो को तोड कर हम सब एक है का बुँलंद नारा देती है। इस मधुशाला में उच नीचता का भेदभाव नही। इस मधुशाला में सभी जाति धर्म के लोग आ सकते है। और जीवन का आनंद लुटा सकते है।निर्माण कविता में निराशा के बाद आशा का आगमन होता है। अंधेरे के बाद प्रकाश का सत्य उद्घाटित होता है। निर्माण कविता में आशा उत्साह आगे बढने की प्रेरणा मिलती है।कवि बच्चनजीने कहा है नाश और निर्माण जीवन के